॥ धूमावती तंत्रम् ॥

धूमावती देवी जिन्हे ज्येष्ठा लक्ष्मी भी कहा है दशमहाविद्याओं में यह सातवीं महाविद्या हैं। इसका स्वरूप वृद्धा कृशकाय तथा विधवारूप में है, बालबिखरे हुये हैं रथ पर आरूढ है जिसके ऊपर काक विराजमान है। शूप इनका मुख्य अस्त्र है जिसमें समस्त विश्व को समेट कर महाप्रलय कर देती हैं। शूप व मूसल से शत्रुसंहार करती हैं भयानक रूप वक्रदंता है। **विशेष ध्यान देने की बात हैं कि** इस विद्या का **स्थायी आवाहन नहीं होता** अर्थात् इसे अपने घर में चिरकाल विराजमान होने की भावना नहीं रखनी चाहिये यह दुःख, क्लेश व दरिद्रता की अधिष्ठात्री है। अर्थात् पूजा व जप करते समय ऐसी भावना करनी चाहिये कि देवी प्रसन्न होकर मेरे समस्त विघ्न, रोग, दोष, क्लेश, प्रेतादि बाधाओं को अपने शूप में समेट कर हमारे घर से विदा हो रही है और हमें धन, लक्ष्मी, सुख, शांति का आशीर्वाद दे रही है। शत्रु निग्रह में यह भावना करनी चाहिये कि शत्रु के धन, वैभव, यश पराक्रम को अपने शूप में समेट रही है मूसल से उसे प्रताडित कर रही है। शत्रु के घर में दुःख दरिद्रता का पूर्ण निवास हो गया है। शत्रु के घर में काकपक्षी बहुसंख्या में विराजमान हैं उसका घर निर्जन होता जा रहा है। शत्रु संहार प्रयोगों में **बगलामुखी व काली** के प्रयोगों में ''**समयाविद्या**'' के रूप में इसका जप पूजन करना चाहिये ऐसी मेरी अभिव्यक्ति है। अगर दुर्भाग्य भी काफी समय से पीछा कर रहा हो तो दुःख दरिद्रता की इस देवी कौ प्रसन्न कर घर से विदा होने की प्रार्थना करनी चाहियें तो यह धन अवश्य देती है ऐसा मेरा अनुभव है। इसकी मुख्य उपासना शून्यगार में करनी चाहियें।

सप्ताक्षर मंत्रः- धूं धूमावती स्वाहा।

॥ ध्यानम् ॥

ध्यायेत् कालाभ्रनीलां विकलितवदनां काकनासां विकर्णाम् ।
संमार्जन्युक शूर्पैयुत मुसल करां वक्रदन्तां विषास्याम् ॥
ज्येष्ठां निर्वाणवेषां प्रकुटित नयनां मुक्तकेशीमुदाराम् ।
शुष्कोत्तुङ्गाति तिर्यक् स्तनभर युगलां निष्कृपां शत्रुहन्त्रीम् ॥

विनियोगः- इस मंत्र के नारसिंह ऋषिः, पंक्तिश्छंदः, धूमावती देवता, धूं बीज, स्वाहा शक्तयः शत्रु निग्रहे जपे विनियोगः।

षडङ्गन्यास- धां, धीं, धूं, धैं, धौं, धः से षडङ्गन्यास करें।

अष्टाक्षर मंत्रः- (१) धूं धूं धूमावती स्वाहा।

इस मंत्र के पिप्पलाद ऋषि, निवृचछंद देवता धूमावती, हैं। धूं बीज, स्वाहा शक्ति हैं।

(२) धूं धूं धूमावती ठः ठः। शाक्त प्रमोद में इसके षडङ्गन्यास ॐ धां, ॐ धीं, ॐ धूं, ॐ धें, ॐ धौं, ॐ धः से करने को कहा हैं।

॥ध्यानम्॥

विवर्णां चञ्चलां दीर्घां च मलिनाम्बरां। विमुक्तकुन्तलां दीर्घां विधवां विरल द्विजाम् ॥
काकध्वज - रथारूढां विलम्बित पयोधरां। शूर्पहस्तां तु रुक्षाक्षीं धूतहस्तां तरान्विताम् ॥
प्रवृद्ध - रोमणी तु भृशं जटिलं कुटिलेक्षणां। क्षुत् पिपासार्दितां नित्यं सदा कलह- तत्पराम् ॥

दशाक्षर मंत्र:- धूं धूं धूं धूमावती स्वाहा।

इस मंत्र के ऋषि स्कन्द। पंक्ति छन्द। देवता धूमिनी। धूं बीज एवं शक्ति स्वाहा हैं।

॥ध्यानम्॥

श्यामाङ्गीं रक्तनयनां श्याम - वस्त्रोत्तरीयकां। वामहस्ते शोधनं च दक्षहस्ते च शूर्पकम् ॥
धृत्वा विकीर्ण केशांश्च धूलिधूसर विग्रहां। लंबोष्ठीं शुभ्रदशनां लम्बमान पयोधराम् ॥
संलग्न भ्रूंयुगगतां कटुदंष्ट्रोष्ठ - वल्लभां। कृसरस्तु कुलुत्थोत्थं भग्नभाण्डतले स्थितम् ॥
तिलपिष्टसमायुक्तं मुहुर्मुहुश्च भक्षितं। महिषीशृङ्ग ताटङ्कीं लम्बकर्णाति भीषणाम् ॥

चतुर्दशाक्षर मंत्र:- धूं धूं धुर धुर धूमावती क्रों फट् स्वाहा। इस मंत्र के ऋषि क्षपणक, छन्द गायत्री, देवता धूमावती, बीज धूं, शक्ति स्वाहा तथा उच्चाटन हेतु विनियोग हैं। अतः इस मंत्र को शत्रु के उच्चाटन हेतु प्रयोग करे।

काकारूढाऽति कृष्णाभा भिन्नदन्ता विरागिणी
मुक्तकेशां सुधूम्राक्षी क्षुत् - तृषार्ता रयातुरा ।
चञ्चला चातिकामार्त्ता क्लिष्टा पुष्टा पिशङ्गिका
मलिना श्रमणी रक्ता व्यक्त - गंधा विरोधिनी ॥
धूत शूर्पाग्रहस्ता च ध्येया धूमावती परा॥

शक्ति सङ्गम तंत्र में पाठान्तर है- रयातुरा - भयातुरा विशङ्गिका। गंधा-गर्भा। धूत-धृत। शूर्पाग्र-सर्पाग्र।

षडङ्गन्यास:- धां, धीं, धूं, धैं, धौं, धः से षडङ्गन्यास करें।

पंचदशाक्षर मंत्र:- (१) ॐ धूं धूमावति देवदत्त धावति स्वाहा।

(२) धूं धूं धूं धुरु, धुरु धूमावति क्रों फट् स्वाहा। देवदत्त का अर्थ अमुक व्यक्ति अमुकशत्रुनाम। उपरोक्त मंत्र के ऋषि ध्यान १४ अक्षर वाले मंत्र के समान हैं।

धूमावती गायत्री- ॐ धूमावत्यै विद्महे संहारिणे धीमहि तन्नो धूमा प्रचोदयात्।

॥ अष्टाक्षर मंत्र प्रयोगः ॥

मंत्रो यथा (मंत्रमहोदधौ) - धूं धूं धूमावति स्वाहा। इत्यष्टाक्षरो मंत्रः। (मेरुतंत्र के अनुसार "धूमावती" के स्थान पर "धूमावती" होना चाहिये।)

विनियोग: – अस्य धूमावतीमंत्रस्य पिप्पलाद ऋषि:। निवृच्छंद:। ज्येष्ठा देवता। धूं बीजम्। स्वाहा शक्ति:। धूमावती कीलकम्। ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोग:।

ऋष्यादिन्यास :- ॐ पिप्पलादऋषये नम: शिरसि ॥१॥ निवृच्छंदसे नम: मुखे ॥२॥ ज्येष्ठादेवतायै नम: हृदि ॥३॥ धूं बीजाय नम: गुह्ये ॥४॥ स्वाहाशक्तये नम: पादयो: ॥५॥ धूमावती कीलकाय नम: नाभौ ॥६॥ विनियोगाय नम: सर्वांगे ॥७॥ इति ऋष्यादिन्यास:।

करन्यास:- ॐ धूं धूं अंगुष्ठाभ्यां नम: ॥१॥ ॐ धूं तर्जनीभ्यां नम: ॥२॥ ॐ मां मध्यमाभ्यां नम: ॥३॥ ॐ वं अनामिकाभ्यां नम: ॥४॥ ॐ तिं कनिष्ठिकाभ्यां नम: ॥५॥ ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नम: ॥६॥ इति करन्यास:।

हृदयादिषडंगन्यास :- ॐ धूं धूं हृदयाय नम: ॥१॥ ॐ धूं शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ मां शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ वं कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तिं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ स्वाहा अस्त्राय फट् ॥६॥ इति हृदयादिषडंगन्यास:। एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत्।

॥ ध्यानम् ॥

अत्युच्चा मलिनांबराखिलजनोद्वेगावहा दुर्मना, रूक्षाक्षित्रितया विशालदशना सूर्य्योदरी चंचला ।
प्रस्वेदाम्बुचिताक्षुधाकुलतनु: कृष्णातिरूक्षाप्रभा, ध्येया मुक्तकचा सदाप्रियकलिर्धूमावती मंत्रिणा ॥१॥

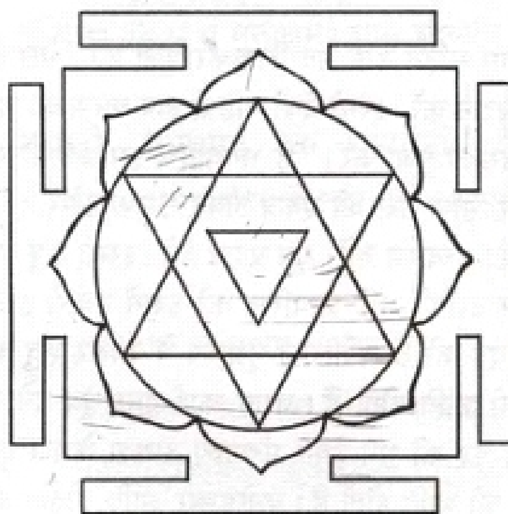
तंत्रांतरेऽपि ध्यानं यथा-

विवर्णा चंचला दुष्टा दीर्घा च मलिनांबरा। विमुक्त कुंतला रूक्षा विधवा विरलद्विजा ।
काकध्वजरथारूढा विलंबितपयोधरा । शूर्प्पहस्तातिरक्ताक्षी धृतहस्ता वरान्विता ।
प्रवृद्धघोणा तु भृशं कुटिला कुटिलेक्षणा । क्षुत्पिपासार्दिता नित्यं भयदा कलहास्पदा ॥२॥

॥ आवरण पूजनम् ॥

भद्रपीठ पर मण्डूकादि पीठदेवता का पूजन करे पश्चात् पूर्वादि क्रम से पीठ की नौ शक्तियों का पूजन करें।

यथा- ॐ कामदायै नम:। ॐ मानदायै नम:। ॐ नक्तायै नम:। ॐ मधुरायै नम:। ॐ मधुराननायै नम:। ॐ नर्मदायै नम:। ॐ भोगदायै नम:। ॐ नंदायै नम:। मध्ये ॐ प्राणदायै नम:।



॥ धूमावती यन्त्रम् ॥

स्वर्ण यंत्र को दुग्धधारा से शुद्धकर ताम्रपात्र में रखकर पीठ पर स्थापित करे। ''ॐ धूमावती योगपीठाय नम:'' से पुष्पादि से आसन देवे। मूर्ति की पूजा करने के पश्चात् आवरण पूजा की आज्ञा हेतु पुष्पांजलि प्रदान करे।

ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये ।
अनुज्ञां देहि मातस्त्वं परिवारार्चनाय मे ॥

त्रिकोण मध्य में देवी का ध्यान करें।

प्रथमावरणम्- (षट्कोणे)- आग्नेयादि चतुर्दिक्षु- ॐ धूं धूं

हृदयाय नमः। हृदय श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः (इति सर्वत्र)। **ॐ धूं शिरसे स्वाहा। ॐ मां शिखायै वषट्। ॐ वं नमः कवचाय हुं। ॐ तिं नेत्रत्रयाय वौषट्** (इति देव्यग्रे)। **ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्।** (इति दिक्षु) पश्चात् पुष्पांजलि देवे।

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।

विशेषार्घ्य से जल छोड़कर कहे "**पूजितास्तर्पिताः संतु**"। इस तरह सभी आवरण पूजा हेतु करें।

द्वितीयावरणम् - (अष्टदले)- **ॐ क्षुधायै नमः। ॐ तृष्णायै नमः। ॐ रत्यै नमः। ॐ निद्रायै नमः। ॐ निर्ऋत्यै नमः। ॐ दुर्गत्यै नमः। ॐ रुषायै नमः। ॐ अक्षमायै नमः।** पुनः पुष्पांजलि देवे।

तृतीयावरणम् - (भूपूरे)- **ॐ इन्द्राय नमः। ॐ अग्नये नमः। ॐ यमाय नमः। ॐ निर्ऋतये नमः। ॐ वरुणाय नमः। ॐ वायवे नमः। ॐ सोमाय नमः। ॐ ईशानाय नमः। ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ अनंताय नमः।**

चतुर्थावरणम् - (भूपूरे)- दिक्पालों के समीप उनके आयुधों की पूजा करे। **ॐ वज्राय नमः। ॐ शक्त्ये नमः। ॐ दण्डाय नमः। ॐ खड्गाय नमः। ॐ पाशाय नमः। ॐ अंकुशाय नमः। ॐ गदायै नमः। ॐ त्रिशूलाय नमः। ॐ पद्माय नमः। ॐ चक्राय नमः।**

पश्चात् धूपदीप नैवेद्यादि अर्पण करें। पश्चात् जप करे। बलि प्रदान करे। एक लक्ष जप कर पुरश्चरण करे, निशाभोजन करे। दशांश होम करे। तर्पण मार्जन कर ब्राह्मण भोजन करें। पुरश्चरण के लिये **कृष्णपक्ष की चतुर्दशी** से उपवास रखे। किसी सूने घर, श्मशान या वन प्रदेश में मौन रहते हुये एक लाख जप करे। पुरश्चरण काल में उष्णीय और आर्द्रवस्त्र धारण करना आवश्यक हैं। फिर शत्रु के नाम पर मूलमंत्र लिखकर उसके ऊपर शिवलिङ्ग का स्थापन कर पूजन पूर्वक जप करें। अन्यत्र लिखा है कि शिवलिङ्ग का निर्माण कर "**अमुकं मारय**" इस प्रकार शत्रुनाम का निर्देश कर जप करना चाहिये। इस प्रकार पाँच सौ बार जप करने से शत्रु ज्वर ग्रस्त होगा। पञ्चगव्य या दूध द्वारा होम से उसका ज्वर छूट सकेगा। पश्चात् देवी का पंचोपचार पूजन करें। जप करें। हरिद्रापत्र पर शत्रु का नाम लिखकर किसी वन के बीच में डालकर उसके ऊपर उक्त मंत्र का १० हजार जप करे तो शत्रु का उच्चाटन होगा। श्मशाग्नि में कौए को दग्ध कर उसकी भस्म को लेकर उसे १०८ मंत्र से अभिमंत्रित करें एवं उस भस्म को शत्रु का नाम लेते हुये आठों दिशाओं में फेंके। इससे भी शत्रु का उच्चाटन होता हैं।

कृष्णपक्ष में श्मशान की भस्म से शिवलिङ्ग बनायें उस पर शत्रुनाम सहित उक्त मंत्र लिखकर पूजा करें। भैंस के दूध द्वारा धूप देकर जो जो पदार्थ शत्रु के अमङ्गल सूचक है वे ही द्रव्य प्रदान करें। इससे देवी महिषी रूप धारण का शत्रु का विनाश करती हैं। श्मशान भस्म से शिवलिङ्ग बनाये। पुष्पादि से उसकी पूजा करे। "हे भगवान्" इस प्रकार उन्हे संबोधन कर अपने अन्तःमन में कर्त्तव्य की चिन्ता करते हुये नीम और काक पक्ष को एकत्र लेकर उसके ऊपर १०८ बार मंत्र का जप करे। फिर "**अमुकं द्वेषय द्वेषय**" कहकर मूल मंत्र का उच्चारण करें, धूप प्रदान करें। इससे शत्रु वर्ग में विद्वेषण होगा। इस विद्वेषण की शांति करनी हो तो चिता काष्ठ लाकर उसकी अग्नि प्रज्वलित करें उसमें दूध से हवन करें। रजस्वला के रक्ताक्तवस्त्र द्वारा निर्मित धूप को जलाकर यदि निवेदन करे तो कालिका गृध्ररूप में आकर शत्रु का संहार करती हैं। निर्माल्य पत्र पुष्पादि द्वारा धूप देने से इस प्रयोग की शांति होती हैं। वराह कर्ण द्वारा धूप देने से देवीरात्रिकाल में शूकर रूप में आकर शत्रु का नाश करती हैं। अश्वत्थ पत्र की धूप देकर पंचगव्य अथवा केवल दूध अथवा घृत, मधु एवं शर्करा से होम करने से सभी प्रकार के अभिचार की शांति होती हैं। यज्ञोडुम्बर आदि श्रीवृक्ष की कील बनाकर उसके ऊपर शत्रुनाम सहित धूमावती का मंत्र लिखे। फिर इस कील के ऊपर मंत्र का जप कर शत्रु के

दोनों पैरों को भूमि में कील द्वारा जटिल करने की भावना करें। इससे शत्रु का उच्चाटन होता है। शत्रु के दोनों पैरों की धूल और घृतसहित पक्षियों की बलि देकर चिता भस्म के ऊपर मूल मंत्र का जप करें। फिर उसी भस्म को शत्रु के घर के भीतर गुप्तरूप से पहुँचाये। इससे शत्रु का उच्चाटन होगा।

॥ धूमावति गायत्री मंत्राः ॥

(१) धूं धूमावति विद्महे विवर्णा देवी धीमहि तन्नो घोरे प्रचोदयात्। (२) ॐ धूमावत्यै विद्महे संहारिण्यै धीमहि तन्नो धूमा प्रचोदयात्।

॥ अंग देवता अघोर रुद्र ॥

(धूमावत्या सपर्यार्णवे) - १. धूमावत्यङ्गमन्त्राश्च वीरेशोबटुकः शिवे। प्रत्यंगिरा च शरभस्तथा पाशुपतो मनुः ॥ संहारास्त्रं च ककुदी तथा कर्कटिका शिवे। मारिणी त्वरिता विद्या कुल्लुका पञ्चकं शिवे ॥

२. अघोर मंत्र - ह्रीं स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर घोर घोरतर तनुरूप चट चट प्रचट प्रचट कह कह वम वम बन्ध बन्ध घातय घातय हुं फट्।

॥ धूम्रवाराही ॥ (कालमृत्यु तंत्रे)

वाराही विद्या में धूमावती का प्रयोग ''धूम्रवाराही'' नाम से है। यंत्रार्चन आदि प्रयोग पुस्तक के द्वितीय पुस्तक उत्तरार्द्ध भाग में वाराही प्रयोगान्तर दिया गया है।

मंत्र- **ॐ धूं धूं मृत्युधूमे धूं धूं कालधूमे धूं धूं धूम्रवाराहि हुँ फट् स्वाहा।**

विनियोगः- **ॐ अस्य श्री धूम्रवाराही मंत्रस्य कालमृत्यु ऋषिः। बृहतीश्छन्दः। धूम्रवाराही देवता। धूं बीजं। हूं शक्तिः। स्वाहा कीलकं। शत्रुमारणे विनियोगः।**

षडङ्गन्यासः- **सप्तभिः पुनः षड्भिर्द्वाभ्यां वेदैर्द्विका (द्वाभ्यांत्रिका) स्त्रिभिः। न्यासं चैवानुलोमेन विलोमेन पुनर्न्यसेत् ॥**

ॐ धूं धूं मृत्युधूमे। धूं धूं कालधूमे धूं धूं धूम्र। वाराहि हूं फट् स्वाहा। वाराहि हुं फट् स्वाहा। धूं धूं कालधूमे धूं धूं धूम्र। ॐ धूं धूं मृत्युधूमे। इनसे हृदयादि न्यास करें।

ध्यानम्-

वाराही धूम्रवर्णा च भक्षयन्ती रिपून् सदा। पशुरूपान् मुनिसुरैर्वन्दितां धूम्ररूपिणीम् ॥

त्रिमधु एवं गुडौदन से तथा मधूक कुसुमों से होम करें।

॥ अस्त्र वाराही ॥

इस विद्या का प्रयोग भी शत्रू के मारण में होता है।

मंत्रः- **ॐ फट् फट् मृत्युरूपे फट् फट् कालरूपे फट् फट् अस्त्रवाराही हुं फट् स्वाहा।**

ऋष्यादिन्यासः- ऋष्यादिन्यास पूर्व मंत्रवत् है।

॥ ध्यानम् ॥

नमस्ते अस्त्रवाराहि वैरिप्राणापहारिणी । गोकण्ठमिव शार्दूलो गजकण्ठं यथा हरिः ॥
शत्रूरूपपशून् हत्वा आशु मांसं च भक्षय । वाराहि त्वां सदा वन्दे वन्द्ये चास्त्रस्वरूपिणी ॥

॥ श्री धूमावती मातृका ॥

धूमावती धूमनेत्रा घर्मटी मर्कटी तथा । घोररूपा च लम्बोष्ठी श्यामा श्याममुखी शिवा ॥१॥
काकध्वजा कोटराक्षी धूमा धूमान्धकारिणी । मुक्तकेशी महाघोरा तथा लम्बपयोधरा ॥२॥
स्वराणां शक्तयः प्रोक्ताः सर्वसिद्धिप्रदायिकाः । कोटरा कोटराक्षी च ऊर्ध्वकेशी दिगम्बरी ॥३॥
तमिस्त्रा तामसी चोग्रा विवर्णा मलिनाम्बरा । लम्बस्तनी च विरलद्विजा दीर्घा कृशोदरी ॥४॥
विधवा शूर्पहस्ता च रूक्षा रूक्ष शिरोधरा । चलहस्ता चञ्चलाक्षी जटिला कुटिलेक्षणा ॥५॥
क्षुधातुरा पिपासार्त्ता तीक्ष्णा रौद्रा भयानका । उत्कारी क्रोधिनी मृत्युः क्रिया रिपुविमर्दिनी ॥६॥
सत्वरा काकजङ्घा च श्मशानालयवासिनी । महाकाली च गदिताः सिद्धा व्यञ्जनशक्तयः ॥७॥

॥ श्री धूमावती कवचम् ॥

॥ श्री पार्वत्युवाच ॥

धूमावत्यर्चनं शंभो श्रुतं विस्तरतो मया । कवचं श्रोतुमिच्छामि तस्या देव वदस्व मे ॥१॥

॥ श्रीभैरव उवाच ॥

शृणु देवि परं गुह्यं न प्रकाश्यं कलौ युगे । कवचं श्रीधूमवत्याः शत्रुनिग्रहकारकम् ॥२॥
ब्रह्माद्या देवि सततं यद्वशादरिघातिनः । योगिनो भवंति शत्रुघ्ना यस्या ध्यानप्रभावतः ॥३॥

विनियोगः – ॐ अस्य श्रीधूमावतीकवचस्य पिप्पलाद ऋषिः । अनुष्टुप्छंदः । श्रीधूमावती देवता । धूं बीजम् । स्वाहा शक्तिः । धूमावती कीलकम् । शत्रुहनने पाठे विनियोगः ।

ॐ धूं बीजं मे शिरः पातु धूं ललाटं सदाऽवतु । धूमा नेत्रयुगं पातु वती कर्णौ सदाऽवतु ॥४॥
दीर्घा तूदरमध्ये तु नाभिं मे मलिनाम्बरा । शूर्पहस्ता पातु गुह्यं रूक्षा रक्षतु जानुनी ॥५॥
मुखं मे पातु भीमाख्या स्वाहा रक्षतु नासिकाम् । सर्वविद्याऽवतु कण्ठं विवर्णा बाहुयुग्मकम् ॥६॥
चञ्चला हृदयं पातु धृष्टा पार्श्वे सदाऽवतु । धूमहस्ता सदा पातु पादौ पातु भयावहा ॥७॥
प्रवृद्धरोमा तु भृशं कुटिला कुटिलेक्षणा । क्षुत्पिपासार्दिता देवी भयदा कलहप्रिया ॥८॥
सर्वांगं पातु मे देवी सर्वशत्रुविनाशिनी । इति ते कथितं पुण्यं कवचं भुवि दुर्लभम् ॥९॥
न प्रकाश्यं न प्रकाश्यं न प्रकाश्यं कलौयुगे । पठनीयं महादेवि त्रिसंध्यं ध्यानतत्परः ॥१०॥
दुष्टाभिचारो देवेशि तद्गात्रं नैव संस्पृशेत् ॥११॥

॥ इति भैरवी भैरव संवादे धूमावतीतत्त्वे धूमावती कवचं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्री धूमावती हृदय स्तोत्रम् ॥

विनियोग :- ॐ अस्य श्रीधूमावतीहृदय स्तोत्र मन्त्रस्य पिप्पलाद ऋषिः। अनुष्टुप्छंदः। श्रीधूमावती देवता। धूं बीजम्। ह्रीं शक्तिः। क्लीं कीलकम्। सर्वशत्रुसंहरणे पाठे विनियोगः।

हृदयादिषडङ्गन्यास :- ॐ धां हृदयाय नमः। ॐ धीं शिरसे स्वाहा। ॐ धूं शिखायै वषट्। ॐ धैं कवचाय हुम्। ॐ धौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ धः अस्त्राय फट्। पश्चात् करन्यास करें।

॥ ध्यानम् ॥

ॐ धूम्राभां धूम्रवस्त्रां प्रकटितदशनां मुक्तवालां वराढ्यां,
काकांकस्यन्दनस्थां धवलकरयुगां शूर्पहस्तातिरूक्षाम्।
नित्यं क्षुत्क्षामदेहां मुहुरतिकुटिलां वारिवांछाविचित्रां,
ध्यायेद् धूमावतीं वामनयनयुगलां भीतिदां भीषणास्याम् ॥१॥

कल्पादौ या कालिकाद्याऽचीकलन्मधुकैटभौ। कल्पांते त्रिजगत्सर्वं धूमावतीं भजामि ताम् ॥२॥
गुणागाराऽगम्यगुणा या गुणागुणवर्द्धिनी। गीतावेदार्थतत्त्वज्ञैर्धूमावतीं भजामि ताम् ॥३॥
खट्वांगधारिणी खर्वा खण्डिनीखलरक्षसाम्। धारिणी खेटकस्यापि धूमावतीं भजामि ताम् ॥४॥
घूर्णा घूर्णकरा घोरा घूर्णिताक्षी घनस्वना। घातिनी घातकानां या धूमावतीं भजामि ताम् ॥५॥
चर्वंतीमस्थिखण्डानां चण्डमुण्डविदारिणीम्। चण्डाट्टहासिनीं देवीं भजे धूमावतीमहम् ॥६॥
छिन्नग्रीवां क्षताच्छन्नां छिन्नमस्तस्वरूपिणीम्। छेदिनीं दुष्टसंघानां भजे धूमावतीमहम् ॥७॥
जाता या याचिता देवैरसुराणां विघातिनी। जल्पंती बहु गर्जंती भजे तां धूम्ररूपिणीम् ॥८॥
झंकारकारिणीं झंझां झंझमाझमवादिनीम्। झटित्याकर्षिणीं देवीं भजे धूमावतीमहम् ॥९॥
टीपटंकार संयुक्तां धनुष्टंकारकारिणीम्। घोरां घनघटाटोपां वंदे धूमावतीमहम् ॥१०॥
ठंठंठंठं मनुप्रीतिं ठःठः मंत्रस्वरूपिणीम्। ठमकाह्वगति प्रीतांभजे धूमावतीमहम् ॥११॥
डमरू डिंडिमारावां डाकिनीगणमण्डिताम्। डाकिनीभोगसन्तुष्टां भजे धूमावतीमहम् ॥१२॥
ढक्कानादेन संतुष्टां ढक्कावादकसिद्धिदाम्। ढक्कावादचलच्चित्तां भजे धूमावतीमहम् ॥१३॥
तत्त्ववार्त्ताप्रियप्राणां भवपाथोधितारिणीम्। तारस्वरूपिणीं तारां भजे धूमावतीमहम् ॥१४॥
थां थीं थूं थें मंत्ररूपां थैं थौं थं थः स्वरूपिणीम्। थकारवर्णसर्वस्वां भजे धूमावतीमहम् ॥१५॥
दुर्गास्वरूपिणीं देवीं दुष्टदानवदारिणीम्। देवदैत्यकृतध्वंसां वंदे धूमावतीमहम् ॥१६॥
ध्वांताकारांधकध्वंसां मुक्तधम्मिल्लधारिणीम्। धूमधाराप्रभां धीरां भजे धूमावतीमहम् ॥१७॥
नर्तकीनटनप्रीतां नाट्यकर्म्मविवर्द्धिनीम्। नारसिंहीं नराराध्यां नौमि धूमावतीमहम् ॥१८॥
पार्वतीपतिसंपूज्यां पर्वतोपरिवासिनीम्। पद्मारूपां पद्मपूजां नौमि धूमावतीमहम् ॥१९॥
फूत्कारसहितश्वासां फट्मंत्रफलदायिनीम्। फेत्कारिगणसंसेव्यां सेवे धूमावतीमहम् ॥२०॥

बलिपूज्यां बलाराध्यां बगलारूपिणीं वराम् । ब्रह्मादिवंदितां विद्यां वंदे धूमावतीमहम् ॥२१॥
भव्यरूपां भवाराध्यां भुवनेशीस्वरूपिणीम् । भक्तभव्यप्रदां देवीं भजे धूमावतीमहम् ॥२२॥
मायां मधुमतीं मान्यां मकरध्वजमानिताम् । मत्स्यमांसमहास्वादां मन्ये धूमावतीमहम् ॥२३॥
योगयज्ञप्रसन्नास्यां योगिनीपरिसेविताम् । यशोदां यज्ञफलदां यजे धूमावतीमहम् ॥२४॥
रामाराध्यपदद्वंद्वां रावणध्वंसकारिणीम् । रमेशरमणीं पूज्यामहं धूमावतीं श्रये ॥२५॥
लक्षलीलाकलालक्ष्यां लोकवंद्यपदांबुजाम् । लंबितां बीजकोशाढ्यां वंदे धूमावतीमहम् ॥२६॥
बकपूज्यपदांभोजां वकध्यानपरायणाम् । बालां बकारिसंध्येयां वंदे धूमावतीमहम् ॥२७॥
शांकरीं शंकरप्राणां संकटध्वंसकारिणीम् । शत्रुसंहारिणीं शुद्धां श्रये धूमावतीमहम् ॥२८॥
षडाननारिसंहंत्रीं षोडशीरूपधारिणीम् । षड्रसास्वादिनीं सौम्यां सेवे धूमावतीमहम् ॥२९॥
सुरसेवितपादाब्जां सुरसौख्यप्रदायिनीम् । सुन्दरीगणसंसेव्यां सेवे धूमावतीमहम् ॥३०॥
हेरंबजननीं योग्यां हास्यलास्यविहारिणीम् । हारिणीं शत्रुसंघानां सेवे धूमावतीमहम् ॥३१॥
क्षीरोदतीरसंवासां क्षीरपानप्रहर्षिताम् । क्षणदेशेज्यपादाब्जां सेवे धूमावतीमहम् ॥३२॥
चतुस्त्रिंशद्वर्णकानां प्रतिवर्णादिनामभिः । कृतं तु हृदयं स्तोत्रं धूमावत्याः सुसिद्धिदम् ॥३३॥
य इदं पठति स्तोत्रं पवित्रं पापनाशनम् । स प्राप्नोति परां सिद्धिं धूमावत्याः प्रसादतः ॥३४॥
पठन्नेकाग्रचित्तो यो यद्यदिच्छति मानवः । तत्सर्वं समवाप्नोति सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥३५॥

॥ इति धूमावतीहृदयं स्तोत्रं समाप्तम् ॥

॥ अथ श्री धूमावती स्तोत्रम् ॥

प्रातर्या स्यात्कुमारी कुसुमकलिकया जापमालां जपंती, मध्याह्ने प्रौढरूपा विकसितवदना चारुनेत्रा निशायाम् ।
संध्यायां वृद्धरूपागलितकुचयुगा मुण्डमालां वहंती सा देवी देवदेवी त्रिभुवनजननी कालिकापातु युष्मान् ॥१॥
वद्धा खट्वांगखेटौ कपिलवरजटामण्डलं पद्मयोनेः, कृत्वा दैत्योत्तमांगैः स्रजमुरसि शिरःशेखरं ताक्ष्र्यपक्षैः ।
पूर्णं रक्तैः सुराणां यममहिष महाभृङ्गमादाय पाणौ, पायाद्वो वंद्यमानः प्रलयमुदितया भैरवः कालरात्र्याम् ॥२॥
चर्वन्तीमस्थिखण्डं प्रकटकटकटाशब्द संघातमुग्रं, कुर्वाणा प्रेतमध्ये कहहकहकहाहास्यमुग्रं कृशांगी ।
नित्यं नित्यप्रसक्ता डमरुडिमडिमान् स्फारयंती मुखाब्जं, पायान्नश्चण्डिकेयं झझमझमझमाजल्पमाना भ्रमंती ॥३॥
टंटंटंटंटटंटाप्रकर टमटमा नादघंटां वहंती, स्फेंस्फेंस्फेंस्फारकारा टकटकितहसा नादसंघट्टभीमा ।
लोलन्मुण्डाग्रमाला ललहलहलहालोललोलाग्रवाचं, चर्वंती चण्डमुण्डं मटमटमटितैश्चर्वयंती पुनातु ॥४॥
वामे कर्णे मृगांकं प्रलय परिगतं दक्षिणे सूर्य्यबिंबं, कण्ठे नक्षत्रहारं वरविकट जटाजूटके मुण्डमालाम् ।
स्कंधे कृत्वोरगेन्द्रध्वजनिकरयुतं ब्रह्मकंकालभारं संहारे, धारयंती मम हरतु भयं भद्रदा भद्रकाली ॥५॥
तैलाभ्यक्तैकवेणी त्रपुमयविलसत्कर्णिकाक्रांतकर्णा, लौहेनैकेन कृत्वा चरणनलिन कामात्मनः पादशोभाम् ।

दिग्वासा रासभेन ग्रसति जगदिदं या यवाकर्णपूरा, वर्षिण्यातिप्रवृद्धा ध्वजवितत‌भुजा सासि देवि त्वमेव ॥६॥
संग्रामे हेतिकृत्तैः सरुधिरदशनैर्यद्भटानां शिरोभिर्मालामाबद्ध्य मूर्ध्नि ध्वजविततभुजा त्वं श्मशाने प्रविष्टा ।
दृष्टा भूतप्रभूतैः पृथुतरजघनाबद्धनागेन्द्रकाञ्ची, शूलाग्रव्यग्रहस्ता मधुरुधिरसदाताम्रनेत्री निशायाम् ॥७॥
दंष्ट्रारौद्रे मुखेऽस्मिंस्तव विशति जगद्देवि सर्व क्षणार्द्धात्, संसारस्यांतकाले नररुधिरवशासम्प्लवे धूमधूम्रे ।
कालीकापालिकी सा शवशयनरता योगिनीयोगमुद्रारक्ता ऋद्धिःसभास्था मरणभयहरा त्वं शिवाचण्डघण्टा ॥८॥
धूमावत्यष्टकं पुण्यं सर्वापद्विनिवारकम् । यः पठेत्साधको भक्त्या सिद्धिं विंदति वांछिताम् ॥९॥
महापदि महाघोरे महारोगे महारणे । शत्रूच्चाटे मारणादौ जंतूनां मोहने तथा ॥१०॥
पठेत्स्तोत्रमिदं देवि सर्वत्र सिद्धिभाग्भवेत् । देवदानवगंधर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः ॥११॥
सिंहव्याघ्रादिकाः सर्वे स्तोत्रस्मरणमात्रतः । दूराद्दूरतरं यांति किं पुनर्मानुषादयः ॥१२॥
स्तोत्रेणानेन देवेशि किं न सिद्ध्यति भूतले । सर्वशांतिर्भवेद्देवि ह्यंते निर्वाणतां व्रजेत् ॥१३॥

॥ इत्यूर्द्ध्वाम्नाये धूमावतीस्तोत्रं समाप्तम् ॥

॥ श्री धूमावत्यष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रम् ॥

॥ ईश्वर उवाच ॥

ॐ धूमावती धूम्रवर्णा धूम्रपानपरायणा । धूम्राक्षमथिनी धन्या धन्यस्थाननिवासिनी ॥१॥
अघोराचारसंतुष्टा अघोराचारमण्डिता । अघोरमंत्रसम्प्रीता अघोरमंत्रपूजिता ॥२॥
अट्टाट्टहासनिरता मलिनाम्बरधारिणी । वृद्धा विरूपा विधवा विद्या च विरलद्विजा ॥३॥
प्रवृद्धघोणा कुमुखी कुटिला कुटिलेक्षणा । कराली च करालास्या कंकाली शूर्पधारिणी ॥४॥
काकध्वजरथारूढा केवला कठिना कुहूः । क्षुत्पिपासार्दिता नित्या ललज्जिह्वा दिगम्बरा ॥५॥
दीर्घोदरी दीर्घरवा दीर्घांगी दीर्घमस्तका । विमुक्तकुंतला कीर्त्या कैलासस्थानवासिनी ॥६॥
क्रूरा कालस्वरूपा च कालचक्रप्रवर्तिनी । विवर्णा चञ्चला दुष्टा दुष्टविध्वंसकारिणी ॥७॥
चण्डीचण्डस्वरूपा च चामुण्डा चण्डनिःस्वना । चण्डवेगा चण्डगतिश्चंडमुण्डविनाशिनी ॥८॥
चाण्डालिनी चित्ररेखा चित्रांगी चित्ररूपिणी । कृष्णा कपर्दिनी कुल्ला कृष्णरूपा क्रियावती ॥९॥
कुम्भस्तनी महोन्मत्ता मदिरापानविह्वला । चतुर्भुजा ललज्जिह्वा शत्रुसंहारकारिणी ॥१०॥
शवारूढा शवगता श्मशानस्थानवासिनी । दुराराध्या दुराचारा दुर्ज्जनप्रीतिदायिनी ॥११॥
निर्मांसा च निराकारा धूमहस्ता वरान्विता । कलहा च कलिप्रीता कलिकल्मषनाशिनी ॥१२॥
महाकालस्वरूपा च महाकालप्रपूजिता । महादेवप्रिया मेधा महासंकटनाशिनी ॥१३॥
भक्तप्रिया भक्तगतिर्भक्तशत्रुविनाशिनी । भैरवी भुवना भीमा भारती भुवनात्मिका ॥१४॥
भूरुण्डा भीमनयना त्रिनेत्रा बहुरूपिणी । त्रिलोकेशी त्रिकालज्ञा त्रिस्वरूपा त्रयीतनुः ॥१५॥
त्रिमूर्तिश्च तथा तन्वी त्रिशक्तिश्च त्रिशूलिनी । इति धूमामहत्स्तोत्रं नाम्नामष्टशतात्मकम् ॥१६॥

मया ते कथितं देवि शत्रुसंघविनाशनम् । कारागारे रिपुग्रस्ते महोत्पाते महाभये ॥१७॥
इदं स्तोत्रं पठेन्मर्त्यो मुच्यते सर्वसंकटैः । गुह्याद्गुह्यतरं गुह्यं गोपनीयं प्रयत्नतः ॥१८॥
चतुष्पदार्थदं नृणां सर्वसम्पत्प्रदायकम् ।

॥ इति धूमावत्यष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रं समाप्तम् ॥

॥ श्री धूमावती सहस्त्रनाम स्तोत्रम् ॥

॥ श्रीभैरव्युवाच ॥

धूमावत्या धर्म्मरात्र्याः कथयस्व महेश्वर । सहस्त्रनामस्तोत्रं मे सर्वसिद्धिप्रदायकम् ॥१॥

॥ श्री भैरव उवाच ॥

शृणु देवि महामाये प्रिये प्राणस्वरूपिणि । सहस्त्रनामस्तोत्रं मे भवशत्रुविनाशनम् ॥२॥

विनियोगः - ॐ अस्य श्रीधूमावती सहस्त्रनामस्तोत्रस्य पिप्पलाद ऋषिः । पंक्तिश्छंदः । धूमावती देवता । शत्रुविनिग्रहे पाठे विनियोगः ।

धूमा धूमवती धूमा धूमपानपरायणा । धौता धौतगिरा धाम्नी धूमेश्वरनिवासिनी ॥३॥
अनंताऽनंतरूपा च अकाराकाररूपिणी । आद्या आनन्ददा नंदा इकारा इन्द्ररूपिणी ॥४॥
धनधान्यार्थवाणीदा यशोधर्म्मप्रियेष्टदा । भाग्यसौभाग्यभक्तिस्था गृहपर्वत - वासिनी ॥५॥
रामरावणसुग्रीव मोहदा हनुमत्प्रिया । वेदशास्त्रपुराणज्ञा ज्योतिश्छंदः स्वरूपिणी ॥६॥
चातुर्य्यचारुरुचिरा रंजनप्रेमतोषदा । कमलास्या सुधावक्त्रा चन्द्रहासा स्मितानना ॥७॥
चतुरा चारुकेशी च चतुर्वर्गप्रदा मुदा । कला कलाधरा धीरा धारिणी वसुनीरदा ॥८॥
हीरा हीरकवर्णाभा हरिणायतलोचना । दंभमोहक्रोधलोभस्नेहद्वेषहरा परा ॥९॥
नरदेवकरी रामा रामानन्द मनोहरा । योगभोगक्रोधलोभहरा हरनमस्कृता ॥१०॥
दानमानज्ञानमान पानगानसुखप्रदा । गजगोऽश्वपदा गुंजा भूतिदा भूतनाशिनी ॥११॥
भवभावा तथा बाला वरदा हरवल्लभा । भगभंगभया माला मालतीमालना ह्वदा ॥१२॥
जालवालहालकाल - कपालप्रियवादिनी । करंजशीलगुंजाढ्या चूतांकुरनिवासिनी ॥१३॥
पनसस्था पानसक्ता पनशेशकुटुम्बिनी । पावनी पावनाधारा पूर्णा पूर्णमनोरथा ॥१४॥
पूता पूतकला पौरा पुराणसुरसुन्दरी । परेशी परदा पारा परमात्मा प्रमोहिनी ॥१५॥
जगन्माया जगत्कर्त्री जगत्कीर्तिर्जगन्मयी । जननी जयिनी जायाजिता जिनजयप्रदा ॥१६॥
कीर्तिज्ञानध्यानमानदायिनी दानवेश्वरी । काव्यव्याकरणज्ञा काप्रज्ञा प्रज्ञानदायिनी ॥१७॥
विज्ञाज्ञा विज्ञजयदा विज्ञा विज्ञप्रपूजिता । परावरेज्या वरदा पारदा शारदा दरा ॥१८॥

दारिणी देवदूती च दमना दमनामदा । परमज्ञानगम्या च परेशी परगा परा ॥१९॥
यज्ञा यज्ञप्रदा यज्ञज्ञान कार्य्यकरी शुभा । शोभिनी शुभ्रमथिनी निशुंभासुरमर्दिनी ॥२०॥
शांभवी शंभुपत्नी च शंभुजाया शुभानना । शांकरी शंकराराध्या संध्यासंध्यासुधर्मिणी ॥२१॥
शत्रुघ्नी शत्रुहा शत्रुप्रदा शात्रवनाशिनी । शैवी शिवालयां शैला शैलराजप्रिया सदा ॥२२॥
शर्वरी शर्वरी शंभुः सुधाढ्या सौधवासिनी । सगुणा गुणरूपा च गौरवी भैरवारवा ॥२३॥
गौरांगी गौरदेहा च गौरी गुरुमती गुरुः । गौर्गौर्गव्यस्वरूपा च गुणानन्दस्वरूपिणी ॥२४॥
गणेशगणदा गुण्या गुणा गौरववांछिता । गणमाता गणाराध्या गणकोटिविनाशिनी ॥२५॥
दुर्गा दुर्जनहंत्री च दुर्जनप्रीतिदायिनी । स्वर्गापवर्गदा दात्री दीना दीनदयावती ॥२६॥
दुर्निरीक्ष्या दुरा दुःस्था दौःस्थ्यभंजनकारिणी । श्वेतपाण्डुरकृष्णाभा कालदा कालनाशिनी ॥२७॥
कर्मनर्मकरी नर्मा धर्माधर्मविनाशिनी । गौरी गौरवदा गोदा गणदा गायनप्रिया ॥२८॥
गङ्गा भागीरथी भंगा भगा भाग्यविवर्द्धिनी । भवानी भवहंत्री च भैरवी भैरवासना ॥२९॥
भीमा भीमरवा भैमी भीमानन्दप्रदायिनी । शरण्या शरणा शम्या शशिनी शंखनाशिनी ॥३०॥
गुणा गुणकरी गौणी प्रिया प्रीतिप्रदायिनी । जनमोहनकर्त्री च जगदानन्ददायिनी ॥३१॥
जिता जाया च विजयाविजया जयदायिनी । कामा काली करालास्या खर्वा खञ्जा खरागदा ॥३२॥
गर्वा गरुत्मती घर्मा घर्घरा घोरनादिनी । चराचरी चराराध्या छिन्ना छिन्नमनोरथा ॥३३॥
छिन्नमस्ता जया जाप्या जगज्जाया च झर्झरी । झकारा झीष्कृतिष्टीका टंका टंकारनादिनी ॥३४॥
ठीका ठकुरठक्कांगी ठठठांकारढुण्ढुरा । ढुण्ढीता राजतीर्णा च तालस्था भ्रमनाशिनी ॥३५॥
थकारा थकरादात्री दीपा दीपविनाशिनी । धन्या धना धनवती नर्मदा नर्ममोदिनी ॥३६॥
पद्मा पद्मावती पीता स्फीता फूत्कारकारिणी । फुल्ला ब्रह्ममयी ब्राह्मी ब्रह्मानन्दप्रदायिनी ॥३७॥
भवाराध्या भवाध्यक्षा भगाली मन्दगामिनी । मदिरा मदिरेक्षा च यशोदा यमपूजिता ॥३८॥
याम्या राम्या रामरूपा रमणी ललिता लता । लंकेशी वाक्प्रदा वाच्या सदाश्रमनिवासिनी ॥३९॥
श्रांता शकाररूपा च षकारा खरवाहना । सह्याद्रिरूपा सानन्दा हरिणी हरिरूपिणी ॥४०॥
हराराध्या बालवा च लवंगप्रेमतोषिता । क्षपा क्षयप्रदा क्षीरा ह्यकारादिस्वरूपिणी ॥४१॥
कालिक कालमूर्तिश्च कलहा कलहप्रिया । शिवा शंदायिनी सौम्या शत्रुनिग्रहकारिणी ॥४२॥
भवानी भवमूर्तिश्च शर्वाणी सर्वमंगला । शत्रुविद्राविणी शैवी शुंभासुरविनाशिनी ॥४३॥
धकारमंत्ररूपा च धूंबीजपरितोषिता । धनाध्यक्षसुता धीरा धरारूपा धरावती ॥४४॥
चर्विणी चन्द्रपूज्या च च्छन्दोरूपा छटावती । छाया छायावती स्वच्छा छेदिनी भेदिनी क्षमा ॥४५॥
वल्गिनी वर्द्धिनी वंद्या वेदमाता बुधस्तुता । धारा धारावती धन्या धर्मदानपरायणा ॥४६॥
गर्भिणी गुरुपूज्या च ज्ञानदात्री गुणान्विता । धर्मिणी धर्मरूपा च घण्टानादपरायणा ॥४७॥

घण्टानिनादिनी घूर्णा घूर्णिता घोररूपिणी । कलिघ्नी कलिदूती च कलिपूज्या कलिप्रिया ॥४८॥
कालनिर्णाशिनी काल्या काव्यदा कालरूपिणी । वर्षिणी वृष्टिदा वृष्टिर्महावृष्टिनिवारिणी ॥४९॥
घातिनी घाटिनी घोण्टा घातकी घनरूपिणी । धूंबीजा धूंजपा नन्दा धूंबीजजपतोषिता ॥५०
धूंधूंबीजजपासक्ता धूंधूंबीजपरायणा । धूंकारहर्षिणी धूमा धनदा धनगर्विता ॥५१॥
पद्मावती पद्ममाला पद्मयोनिप्रपूजिता । अपारा पर्णपूर्णा तु पूर्णिमापरिवन्दिता ॥५२॥
फलदा फलभोक्त्री च फलिनी फलदायिनी । फूत्कारिणी फलावाप्ती फलभोक्त्री फलान्विता ॥५३॥
वारिणी वारणप्रीता वारिपाथोधिपारगा । विवर्णा धूम्रनयना धूम्राक्षी धूम्ररूपिणी ॥५४॥
नीतिर्नीतिस्वरूपा च नीतिज्ञा नयकोविदा । तारिणीताररूपा च तत्त्वज्ञानपरायणा ॥५५॥
स्थूला स्थूलाधरा स्थात्री उत्तमस्थानवासिनी । स्थूला पद्मपदस्थाना स्थानभ्रष्टा स्थलस्थिता ॥५६॥
शोषिणी शोभिनी शीता शीतपानीयपायिनी । शारिणी शांखिनी शुद्धा शंखासुरविनाशिनी ॥५७॥
शर्वरी शर्वरीपूज्या शर्वरीशप्रपूजिता । शर्वरीजागृता योग्या योगिनी योगिवंदिता ॥५८॥
योगिनीगणसंसेव्या योगिनीयोगभाविता । योगमार्गरता युक्ता योगमार्गानुसारिणी ॥५९॥
योगभावा योगयुक्ता यमिनीपतिवन्दिता । अयोग्या योधिनी योद्धी युद्धकर्मविशारदा ॥६०॥
युद्धमार्गरतानंता युद्धस्थाननिवासिनी । सिद्धा सिद्धेश्वरी सिद्धिः सिद्धिगेहनिवासिनी ॥६१॥
सिद्धरीतिः सिद्धप्रीतिः सिद्धा सिद्धांतकारिणी । सिद्धगम्या सिद्धपूज्या सिद्धवंद्या सुसिद्धिदा ॥६२॥
साधिनी साधनप्रीता साध्या साधनकारिणी । साधनीया साध्यसाध्या साध्यसंघसुशोभिनी ॥६३॥
साध्वी साधुस्वभावा सा साधुसंततिदायिनी । साधुपूज्या साधुवंद्या साधुसंदर्शनोद्यता ॥६४॥
साधुदृष्टा साधुपृष्टा साधुपोषणतत्परा । सात्त्विकी सत्त्वसंसिद्धा सत्त्वसेव्या सुखोदया ॥६५॥
सत्त्ववृद्धिकरी शांता सत्त्वसंहर्षमानसा । सत्त्वज्ञाना सत्त्वविद्या सत्त्वसिद्धांतकारिणी ॥६६॥
सत्त्ववृद्धिः सत्त्वसिद्धिः सत्त्वसम्पन्नमानसा । चारुरूपा चारुदेहा चारुचञ्चललोचना ॥६७॥
छद्मिनी छद्मसंकल्पा छद्मवार्ता क्षमाप्रिया । हठिनी हठसम्प्रीतिर्हठवार्त्ता हठोद्यमा ॥६८॥
हठकार्य्या हठधर्म्मा हठकर्मपरायणा । हठसम्भोगनिरता हठात्काररतिप्रिया ॥६९॥
हठसंभेदिनी हृद्या हृद्यवार्ता हरिप्रिया । हरिणी हरिणीदृष्टिर्हरिणीमांसभक्षणा ॥७०॥
हरिणाक्षी हरिणपा हरिणीगणहर्षदा । हरिणीगणसंहंत्री हरिणीपरिपोषिका ॥७१॥
हरिणीमृगयासक्ता हरिणीमानपुरःसरा । दीना दीनाकृतिर्दूना द्राविणी द्रविणप्रदा ॥७२॥
द्रविणाचलसंवासा द्रविता द्रव्यसंयुता । दीर्घा दीर्घपदा दृश्या दर्शनीया दृढाकृतिः ॥७३॥
दृढा दुष्टमतिर्दुष्टा द्वेषिणी द्वेषिभंजिनी । दोषिणी दोषसंयुक्ता दुष्टशत्रुविनाशिनी ॥७४॥
देवतार्तिहरा दुष्टदैत्यसंघविदारिणी । दुष्टदानवहंत्री च दुष्टदैत्य निषूदिनी ॥७५॥
देवताप्राणदा देवी देवदुर्गतिनाशिनी । नटनायकसंसेव्या नर्त्तकी नर्त्तकप्रिया ॥७६॥

नाट्यविद्या नाट्यकर्त्री नादिनी नादकारिणी । नवीना नूतना नव्या नवीनवस्त्रधारिणी ॥७७॥
नव्यभूषा नव्यमाल्या नव्यालंकारशोभिता । नकारवादिनी नम्या नवभूषणभूषिता ॥७८॥
नीचमार्गा नीचभूमिर्नीचमार्गगतिर्गतिः । नाथसेव्या नाथभक्ता नाथानंदप्रदायिनी ॥७९॥
नम्रा नम्रगतिर्नेत्री निदानवाक्यवादिनी । नारीमध्यस्थिता नारी नारीमध्यगताऽनघा ॥८०॥
नारीप्रीतिर्नराराध्या नरनामप्रकाशिनी । रति रतिप्रिया रम्या रतिप्रेमा रतिप्रदा ॥८१॥
रतिस्थानस्थिताऽऽराध्या रतिहर्षप्रदायिनी । रतिरूपा रतिध्याना रतिरीतिसुधारिणी ॥८२॥
रतिरासमहोल्लासा रतिरासविहारिणी । रतिकांतस्तुता राशी राशिरक्षणकारिणी ॥८३॥
अरूपा शुद्धरूपा च सुरूपा रूपगर्विता । रूपयौवनसम्पन्ना रूपराशी रमावती ॥८४॥
रोधिनी रोषिणी रुष्टा रोषिरुद्धा रसप्रदा । मादिनी मदनप्रीता मधुमत्ता मधुप्रदा ॥८५॥
मद्यपा मद्यपध्येया मद्यपप्राणरक्षिणी । मद्यपानन्ददात्री च मद्यपप्रेमतोषिता ॥८६॥
मद्यपानरता मत्ता मद्यपानविहारिणी । मदिरा मदिरारक्ता मदिरापानहर्षिणी ॥८७॥
मदिरापानसंतुष्टा मदिरापानमोहिनी । मदिरामानसा मुग्धा माध्वीपा मदिराप्रदा ॥८८॥
माध्वीदानसदानन्दा माध्वीपानरता सदा । मोदिनी मोदसंदात्री मुदिता मोदमानसा ॥८९॥
मोदकर्त्री मोददात्री मोदमङ्गलकारिणी । मोदकादान संतुष्टा मोदकग्रहणक्षमा ॥९०॥
मोदकालब्धिसंक्रुद्धा मोदकप्राप्तितोषिणी । मांसादा मांससंभक्षा मांसभक्षणहर्षिणी ॥९१॥
मांसपाकपरप्रेमा मांसपाकालयस्थिता । मत्स्यमांसकृतास्वादा मकारपञ्चकाचिता ॥९२॥
मुद्रा मुद्रान्विता माता महामोहा मनस्विनी । मुद्रिका मुद्रिकायुक्ता मुद्रिकाकृतलक्षणा ॥९३॥
मुद्रिकालंकृता माद्री मन्दराचलवासिनी । मन्दराचलसंसेव्या मन्दराचलवासिनी ॥९४॥
मन्दरध्येयपादाब्जा मन्दरारण्यवासिनी । मन्दुरावासिनी मन्दा मारिणी मारिका मिता ॥९५॥
महामारी महामारीशमिनी शवसंस्थिता । शवमांसकृताहारा श्मशानालयवासिनी ॥९६॥
श्मशानसिद्धिसंहृष्टा श्मशानभवनस्थिता । श्मशानशयनागारा श्मशानभस्मलेपिता ॥९७॥
श्मशानभस्मभीमाङ्गी श्मशानावासकारिणी । शामिनी शमनाराध्या शमनस्तुतिवन्दिता ॥९८॥
शमनाचारसंतुष्टा शमनागारवासिनी । शमनस्वामिनी शांतिः शांतसज्जन पूजिता ॥९९॥
शांतपूजापरा शांता शांतागारप्रभोजिनी । शांतपूज्या शांतवंद्या शांतग्रहसुधारिणी ॥१००॥
शांतरूपा शांतियुक्ता शांतचन्द्रप्रभाऽमला । अमला विमलाऽम्लाना मालतीकुंजवासिनी ॥१०१॥
मालतीपुष्पसंप्रीता मालतीपुष्पपूजिता । महोग्रा महती मध्या मध्यदेशनिवासिनी ॥१०२॥
मध्यमध्वनिसंप्रीता मध्यमध्वनिकारिणी । मध्यमा मध्यमप्रीतिर्मध्यमप्रेमपूरिता ॥१०३॥
मध्याङ्गचित्रवसना मध्यखिन्ना महोद्धता । महेन्द्रसुरसम्पूज्या महेन्द्रपरिवन्दिता ॥१०४॥
महेन्द्रजालसंयुक्ता महेन्द्रजालकारिणी । महेन्द्रमानिता मान्या मानिनीगणमध्यगा ॥१०५॥

मानिनीमानसंप्रीता गानविध्वंसकारिणी । मानिन्याकर्षिणी मुक्तिर्मुक्तिदात्री सुमुक्तिदा ॥१०६॥
मुक्तिद्वेषकरी मूल्यकारिणी मूल्यहारिणी । निर्मूला मूल संयुक्ता मूलिनी मूलमंत्रिणी ॥१०७॥
मूलमन्त्रकृताहांद्या मूलमंत्रार्घहर्षिणी । मूलमंत्रप्रतिष्ठात्री मूलमंत्रप्रहर्षिणी ॥१०८॥
मूलमंत्रप्रसन्नास्या मूलमंत्रप्रपूजिता । मूलमंत्रप्रणेत्री च मूलमंत्रकृतार्चना ॥१०९॥
मूलमंत्रप्रहृष्टात्मा मूलविद्या मलापहा । विद्याऽविद्या वटस्था च वटवृक्षनिवासिनी ॥११०॥
वटवृक्षकृतस्थाना वटपूजापरायणा । वटपूजापरिप्रीता वटदर्शनलालसा ॥१११॥
वटपूजाकृताह्लादा वटपूजाविवर्द्धिनी । वशिनी विवशाराध्या वशीकरणमंत्रिणी ॥११२॥
वशीकरणसम्प्रीता वशीकारकसिद्धिदा । बटुका बटुकाराध्या बटुकाहारदायिनी ॥११३॥
बटुकार्चापरा पूज्या बटुकार्चाविवर्द्धिनी । बटुकानन्दकर्त्री च बटुकप्राणरक्षिणी ॥११४॥
बटुकेज्याप्रदाऽपारा पारिणी पार्वतीप्रिया । पर्वताग्रकृतावासा पर्वतेन्द्रप्रपूजिता ॥११५॥
पार्वतीपतिपूज्या च पार्वतीपतिहर्षदा । पार्वतीपतिबुद्धिस्था पार्वतीपतिमोहिनी ॥११६॥
पर्वतीयद्विजाराध्या पर्वतस्था प्रतारिणी । पद्मला पद्मिनी पद्मा पद्ममालाविभूषिता ॥११७॥
पद्मजाढ्यपदा पद्ममालालंकृतमस्तका । पद्मार्चितपदद्वंद्वा पद्महस्ता पयोधिजा ॥११८॥
पयोधिपारगंत्री च पयोधिपरिकीर्त्तिता । पाथोधिपारगा पूता पल्वलांबुप्रतर्पिता ॥११९॥
पल्वलांतः पयोमग्ना पवमानगतिर्गतिः । पयःपाना पयोदात्री पानीयपरिकांक्षिणी ॥१२०॥
पयोजमालाभरणा मुण्डमालाविभूषणा । मुण्डिनी मुण्डहंत्री च मुण्डिता मुण्डशोभिता ॥१२१॥
मणिभूषा मणिग्रीवा मणिमालाविराजिता । महामोहा महाशौर्या महामाया महाहवा ॥१२२॥
मानवी मानवीपूज्या मनुवंशविवर्द्धिनी । मठिनी मठसंहंत्री मठसम्पत्तिहारिणी ॥१२३॥
महाक्रोधवती मूढा मूढशत्रुविनाशिनी । पाठीनभोजिनी पूर्णा पूर्णाहारविहारिणी ॥१२४॥
प्रलयानलतुल्याभा प्रलयानलरूपिणी । प्रलयार्णव संमग्ना प्रलयाब्धिविहारिणी ॥१२५॥
महाप्रलयसंभूता महाप्रलयकारिणी । महाप्रलयसंप्रीता महाप्रलयसाधिनी ॥१२६॥
महाप्रलयसंपूज्या महाप्रलयमोदिनी । छेदिनी च्छिन्नमुण्डोग्रा छिन्ना छिन्नरुहार्थिनी ॥१२७॥
शत्रुसंछेदिनी छन्ना क्षोदिनी क्षोदकारिणी । लक्षिणी लक्षसंपूज्या लक्षिता लक्षणान्विता ॥१२८॥
लक्षशस्त्रसमायुक्ता लक्षबाणप्रमोचिनी । लक्षपूजापराऽलक्ष्या लक्षकोदण्डखण्डिनी ॥१२९॥
लक्षकोदण्डसंयुक्ता लक्षकोदण्डधारिणी । लक्षलीलालया लभ्या लक्षागारनिवासिनी ॥१३०॥
लक्षलोभपरा लोला लक्षभक्तप्रपूजिता । लोकिनी लोकसंपूज्या लोकरक्षणकारिणी ॥१३१॥
लोकवन्दित पादाब्जा लोकमोहनकारिणी । ललिता लालितालीना लोकसंहारकारिणी ॥१३२॥
लोकलीलाकरी लोक्या लोकसंभवकारिणी । भूतशुद्धिकरी भूतरक्षिणी भूतपोषिणी ॥१३३॥
भूतवेताल संयुक्ता भूतसेनासमावृता । भूतप्रेतपिशाचादिस्वामिनी भूतपूजिता ॥१३४॥
डाकिनी शाकिनी डेया डिण्डिमारावकारिणी । डमरुवाद्यसंतुष्टा डमरुवाद्यकारिणी ॥१३५॥

हूंकारकारिणी होत्री हविनी हवनार्थिनी । हासिनी ह्रासिनी हास्यहर्षिणी हठवादिनी ॥१३६॥
अट्टाट्टहासिनी टीका टीकानिर्माणकारिणी । टंकिनी टंकिता टंका टंकामात्रसुवर्णदा ॥१३७॥
टंकारिणी टकाराढ्या शत्रुत्रोटनकारिणी । त्रुटिता त्रुटिरूपा च त्रुटिसंदेहकारिणी ॥१३८॥
तर्षिणी तृट्परिक्लांता क्षुत्क्षामा क्षुत्परिप्लुता । अक्षिणी तक्षिणी भिक्षाप्रार्थिनी शत्रुभक्षिणी ॥१३९॥
कांक्षिणी कुट्टिनी क्रूरा कुट्टिनीवेश्मवासिनी । कुट्टिनीकोटिसंपूज्या कुट्टिनीकुलमार्गिणी ॥१४०॥
कुट्टिनीकुलसंरक्षा कुट्टिनीकुलरक्षिणी । कालपाशावृता कन्या कुमारीपूजनप्रिया ॥१४१॥
कौमुदी कौमुदीदृष्टा करुणादृष्टिसंयुता । कौतुकाचारनिपुणा कौतुकागारवासिनी ॥१४२॥
काकपक्षधरा काकरक्षिणी काकसंवृता । काकांकरथसंस्थाना काकांकस्यन्दनस्थिता ॥१४३॥
काकिनी काकदृष्टिश्च काकभक्षणदायिनी । काकमाता काकयोनिः काकमण्डलमण्डिता ॥१४४॥
काकदर्शनसंशीला काकसंकीर्णमन्दिरा । काकध्यानस्थदेहादिध्यानगम्याऽधमावृता ॥१४५॥
धनिनी धनिसंसेव्या धनच्छेदनकारिणी । धुंधुरा धुंधुराकारा धूम्रलोचन - घातिनी ॥१४६॥
धूंकारिणी च धूंमंत्रपूजिताधर्मनाशिनी । धूम्रवर्णा च धूम्राक्षी धूम्राक्षासुरघातिनी ॥१४७॥
धूंबीजजपसंतुष्टा धूंबीजजपमानसा । धूंबीजजपपूजार्हा धूंबीजजपकारिणी ॥१४८॥
धूंबीजकर्षिता धृष्या धर्षिणी धृष्टमानसा । धूलिप्रक्षेपिणी धूलिव्याप्तधम्मिल्लधारिणी ॥१४९॥
धूंबीजजपमालाढ्या धूंबीजनिन्दकांतका । धर्मविद्वेषिणी धर्मरक्षिणी धर्मतोषिता ॥१५०॥
धारास्तंभकरी धूर्ता धारावारिविलासिनी । धां धीं धूं धैं मंत्रवर्णा धौं धः स्वाहास्वरूपिणी ॥१५१॥
धरित्रीपूजिता धूर्वा धान्यच्छेदनकारिणी । धिक्कारिणी सुधीपूज्या धामोद्याननिवासिनी ॥१५२॥
धामोद्यानपयोदात्री धामधूलिप्रधूलिता । महाध्वनिमती धूप्या धूपामोदप्रहर्षिणी ॥१५३॥
धूपादानमतिप्रीता धूपदानविनोदिनी । धीवरीगणसंपूज्या धीवरीवरदायिनी ॥१५४॥
धीवरीगणमध्यस्था धीवरीधामवासिनी । धीवरीगणगोप्त्री च धीवरीगणतोषिता ॥१५५॥
धीवरीधनधात्री च धीवरीप्राणरक्षिणी । धात्रीशा धातृसंपूज्या धात्रीवृक्षसमाश्रया ॥१५६॥
धात्रीपूजनकर्त्री च धात्रीरोपणकारिणी । धूम्रपान रतासक्ता धूम्रपानरतेष्टदा ॥१५७॥
धूम्रपानकरानन्दा धूम्रवर्षणकारिणी । धन्यशब्दश्रुतिप्रीता धुंधुकारिजनच्छिदा ॥१५८॥
धुंधुकारीष्टसंदात्री धुंधुकारिसुमुक्तिदा । धुंधुकार्य्याराध्यरूपा धुंधुकारिमनःस्थिता ॥१५९॥
धुंधुकारिहिताकांक्षी धुंधुकारिहितैषिणी । धिंधिमाराविणी ध्यात्री ध्यानगम्या धनार्थिनी ॥१६०॥
धोरिणी धोरणप्रीता घोरिणी घोररूपिणी । धरित्रीरक्षिणी देवी धराप्रलयकारिणी ॥१६१॥
धराधरसुताऽशेषधाराधरसमद्युतिः । धनाध्यक्षा धनप्राप्तिर्द्धनधान्यविवर्द्धिनी ॥१६२॥
धनाकर्षणकर्त्री च धनाहरणकारिणी । धनच्छेदनकर्त्री च धनहीना धनप्रिया ॥१६३॥
धनसंवृद्धिसंपन्ना धनदानपरायणा । धनहृष्टा धनपुष्टा दानाध्ययनकारिणी ॥१६४॥
धनरक्षा धनप्राणा धनानंदकरी सदा । शत्रुहंत्री शवारूढा शत्रुसंहारकारिणी ॥१६५॥

शत्रुपक्षक्षतिप्रीता शत्रुपक्षनिषूदिनी । शत्रुग्रीवाच्छिदा छाया शत्रुपद्धतिखण्डिनी ॥१६६॥
शत्रुप्राणहरा हार्य्याशत्रुन्मूलनकारिणी । शत्रुकार्य्यविहंत्री च सांगशत्रुविनाशिनी ॥१६७॥
सांगशत्रुकुलच्छेत्री शत्रुसद्मप्रदाहिनी । सांगसायुधसर्वारि - सर्वसम्पत्तिनाशिनी ॥१६८॥
सांगसायुधसर्वारिदेहगेह प्रदाहिनी । इतीदं धूमरूपिण्याः स्तोत्रं नामसहस्रकम् ॥१६९॥
यः पठेच्छून्यभवने संध्यांते यतमानसः । मदिरामोदयुक्तो वै देवीध्यानपरायणः ॥१७०॥
तस्य शत्रुः क्षयं याति यदि शक्रसमोऽपि वै । भवपाशहरं पुण्यं धूमावत्याः प्रियं महत् ॥१७१॥
स्तोत्रं सहस्रनामाख्यं मम वक्त्राद्विनिर्गतम् । पठेद्वा श्रृणुयाद्वापि शत्रुघातकरो भवेत् ॥१७२॥

न देयं परशिष्यायाऽभक्ताय प्राणवल्लभे ।
देयं शिष्याय भक्ताय देवीभक्तपराय च ।
इदं रहस्यं परमं दुर्लभं दुष्टचेतसाम् ॥१७३॥

॥ इति श्रीभैरवीतंत्रे भैरवीभैरव संवादे धूमावती सहस्रनाम स्तोत्रं समाप्तम् ॥

॥ इति श्री धूमावती तंत्रं सम्पूर्णम् ॥



